3.

4. # अनुच्छेद

1. करत-करत अभ्यास के जड़मति होत सुजान।

संकेत बिंदु : • जीवन में श्रम का महत्व • ऐतिहासिक उदाहरण • निष्कर्ष।

मानव जीवन में श्रम का विशेष महत्व होता है। यही वह शक्ति है, जो दुर्बल को सबल और रंक को राजा बना सकती है। परिश्रमी व्यक्ति अनवरत कर्म करते हुए बड़े-बड़े मार्ग तय कर लेता है। अपने परिश्रम के बल पर एक पिछड़ा हुआ छात्र भी उत्तीर्ण हो सकता है। इस संदर्भ में वरदराज का उल्लेख करना सर्वथा उपयुक्त है। वरदराज जी को उनके गुरु ने बार-बार असफल होते रहने पर मंदबुद्धि समझकर अपने आश्रम से वापिस भेज दिया था कि वे कुछ नहीं बन सकते, परिश्रम करना उनके बूते से बाहर है लेकिन राह में उन्हें एक कुएँ के पास विश्राम के लिए रुकना पड़ा। वहाँ कुएँ की मुँडेर पर ऊपर-नीचे आती-जाती रस्सी से पड़े निशान को देखकर उन्हें अनवरत परिश्रम करते रहने का महत्व ज्ञात हुआ और वह आश्रम लौट आया। उसने तत्पश्चात धैर्यपूर्वक परिश्रम किया। उसके बल पर वह ज्ञानी ऋषि वरदराज वैयाकरण के रूप में विख्यात हुए।

परिश्रम व्यक्ति को उन्नति के सर्वोच्च शिखर तक पहुँचा सकता है। इतिहास के अध्येता भली-भाँति समझते हैं कि अर्थ और कीर्ति प्राप्त करने वाले प्रत्येक व्यक्ति ने परिश्रम को सबसे अधिक महत्व दिया है। कर्तव्यनिष्ठ कर्मयोगी ही सदैव शिखर तक पहुँच पाते हैं और अपना तथा राष्ट्र का नाम ऊँचा करते हैं। श्रम की उपादेयता को कोई भी अस्वीकार नहीं कर सकता।

2. गुरु कुम्हार सिख कुंभ है, गढ़ि गढ़ि काढ़ै खोट।

संकेत बिंदु : • अर्थ •आदर्श अध्यापक के गुण • विद्यार्थियों के जीवन पर प्रभाव।

अध्यापक को गुरु भी कहते हैं। 'गु' का अर्थ है अंधकार 'रु' का अर्थ है निरोधक अर्थात गुरु वह है, जो शिष्य के अज्ञान रूपी अंधकार को दूर करता है। गुरु के लिए कहा भी गया है:-

Scanned with CamScanner

गुरुब्रह्मा गुरुविष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः।

गुरुः साक्षात् परम् ब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः।।

आदर्श अध्यापक शिष्यों के हृदय में शुभ संस्कारों का सर्जक होने के नाते ब्रह्मा हैं, उनके रक्षणवर्धन के नाते विष्णु है तथा अशुभ संस्कारों, कुप्रवृत्तियों एवं अंतर्विकारों के अपाकरण के कारण साक्षात् शंकर है। कबीर दास जी ने भी कहा है:-

गुरु कुम्हार ~~सिख~~ शिष्य कुंभ हैं, गढ़ि गढ़ि काढ़ै खोट।

अंतर हाथ सहार दे, बाहर-बाहे चोट ।।

जिस प्रकार कुम्हार बाहर से घड़े को ठोकता-पीटता है तथा भीतर से हाथ का सहारा देकर खोट निकालकर लोगों के उपयोग के लिए उस का निर्माण करता है, उसी प्रकार आदर्श अध्यापक भीतर से अपनी सहानुभूति का सहारा देता हुआ ऊपर से आवश्यकता पड़ने पर प्रहार करते हुए अपने शिष्य का नव निर्माण करता है। वह कभी संकुचित दृष्टिकोण का शिकार नहीं होता। आदर्श अध्यापक में माता का-सा धैर्य होता है। वह दुर्बल कमज़ोर बच्चे पर अधिक ध्यान देता है। कदम-कदम पर उचित मार्गदर्शन करता है और उसे अधिक समय देता है।

Scanned with CamScanner